मान

सतीश राठी

त्रिपुर, आर-451, महालक्ष्मी नगर, इंदौर

ईमेल – rathisatish1955@gmail.com

"बाई जी मुझे पाँच दिन की छुट्टी चाहिए।"

"पाँच दिन! इतने दिन की छुट्टी का?"

"मेरे सास की पहली राखी है। अब इतने दिनों बाद गाँव जाऊँगी तो रुकना तो पड़ेगा न। सब मिलने वाले आएंगे, रिश्तेदार आएंगे।"

"पर पाँच दिन मेन मेरा यहाँ उठावना हो जाएगा।"

"मैं वैसे भी मालकिन कहाँ छुट्टी लेती हूँ। अब इस बार तो जाना ही पड़ेगा।"

"कब से जाने वाली है ?"

"आज आखिरी काम कर रही हूँ कल से चली जाऊँगी।"

मालकिन कुछ देर तक सोचती रही, फिर उसके हाथ मेन हजार पकड़ाकर बोली, "अब राखी पर जा रही है तो अच्छे से खर्चा कर लेना। सब रिश्तेदार लोग आएंगे। अपना मान नीचे मत गिरने देना।"

मालकिन ने उसका इतना मान रखा है यह सोचकर कमली की अन्ख मेन आँसू आ गए।

अनाथों का नाथ

गणेश जी की मूर्ति के सामने उसकी आँखों से धार – धार आँसू बह रहे थे। मंदिर के बाहर उसे किसी ने कह दिया था कि, यह खड़े गणेश का जो मंदिर है, वह बहुत चमत्कारी है बेटा। जो मान ग लेगा वह मिल जाएगा। दुखी मन बेचारा क्या करे। विश्वास कर वह बुद्धि देने वाले गणपति से विद्या की भिक्षा मांग रहा था।

गाँव में माँ और बापू के मरने के बाद निहाल को गाँव के जमींदार ने बुलाया और कह दिया कि, कल से यह यहाँ पर आना। दिन भर यहीं पर झाड़ू बुहारा और दूसरे काम करना। तुझे दोनों टाइम का खाना यहीं मिल जायेगा।

उसे समझ में आ गया था कि, बापू की तरह उसका भी अब बंधुआ मजदूर बनाने का मौका आ गया है। पर अनाथ का कौन? गाँव में सबने कह दिया, जमींदार से बैर मत लेना, चले जाना। निहाल के मन में तो पढ़ने की लगन लगी थी, इसीलिए वह गाँव छोड़कर शहर में भाग आया था। मन में विचार आया कि, अनाथों का नाथ कौन? अनाथों का नाथ तो भगवान ही होता है। औरबस मंदिर में चला आया था।

शायद उसका भाग्य प्रबल था। एक व्यक्ति जो उसे बहुत देर से गणपति के समक्ष रोते, गिड़गिड़ाते हुए देख रहा था, उसके पास आकर बोला, 'वह जो हाथी जैसे चाल में आ रहे हैं न! वह यह यहाँ के बड़े रवाले के जमींदार हैं। बहुत दयालू आदमी हैं। उनसे हाथ जोड़कर विनती कर लेना, तो फिर तेरे रहने, खाने, पढ़ने की व्यवस्था हो जायेगी।'

निहाल को तो लगा जैसे भगवान ने ही उसके लिए मददगार भेज दिया है। वह रोता रोता जाकर जमींदार के पैरों में गिर गया। जमींदार साहब एकदम चौंक गए, फिर उससे कुछ पूछा "क्या बात है रो क्यों रहा है?'

निहाल ने कहा, 'गाँव से भागकर आया हूँ। माँ और बापू दोनों नहीं रहे। अनाथ हूँ। आगे पढ़ना चाहता हूँ। बड़ा आदमी बनना चाहता हूँ। बड़ा आदमी बनना चाहता हूँ ..... आप सबके जैसा।'

कुछ भगवान की प्रेरणा और कुछ जमींदार साहब का दयालू दिल। वे उसे अपने साथ अपने बड़े रावले के महल; में ले गये, जहां नीचे उन्होने गरीब छात्रों के रहने और खाने की व्यवस्था कर रखी थी। निहाल की भी वहां रहने – खाने की व्यवस्था हो गई। कृतज्ञ आँखों से झर-झर आँसू बह रहे थे। निहाल ने सोचा, वह मंदिर में खड़ा गणपति अनाथों का नाथ है या यह जमींदार साहब।

अनायास ही उसके दोनों हाथ भगवान को ध्यान कर जमींदार जी के समक्ष कृतज्ञता से जुड़ गए।